

बजत कुंज में मंजु बांसुरी, ब्रज बधू बंधी प्रेम रास री ।
घर तज्यो गई कृष्ण पास री, शरद चंद कीनो उजास री ॥१॥
हरि कियो जवे मंद हास री , निरखि के भयो ताप नास री ।
सुमन कुंज राजे विकास री, भ्रमर पुंज गुंजे सुवास री ॥२॥
गुन भरी तिया रूप रास री, पुन प्रवीन हैं प्रेम गाँस री ।
अतनु मोद भाव प्रकास री, मिल गुपाल कीने विलास री ॥३॥
मद गुमान ही जाँन तासु री, हृदय में छिपे श्रीनिवास री ।
बिरह जात बाढ्यो हुतास री , तरु लतान पूंछे उदास री ॥४॥
सघन कुंज कीनी तलास री, गुन कथा रची याहि आस री ।
भरत नैन ऊंचे उसास री, करि कृपा मिले पीत वास री ॥५॥
वदन कंज है चारु हांस री, मदन मान जातें निरास री ।
कर गहे जुरी आसपास री, भरत अंक बाढ्यो हुलास री ॥६॥
अधर पान कीने हूँ प्यास री , मिटत नाँहि जैसै ऊपास री ।
लिपट स्याम सों ऐसी भास री, घन सुदामिनी भाद्र मास री ॥७॥
करत कृष्ण के संग रास री, सरस राग गावें खुलास री ।
सुर जु सप्त नीके निकास री , मुरज बीन बाजे मिठास री ॥८॥
बजत मंजु मंजीर लास री, नचत मोर छाँडे अवास री ।
सुर विमान छाये अकास री , परत पुष्प वृष्टि तहाँ सुरी ॥९॥
कट गई तवे गेह फाँस री, हट गयो जु संसार त्रास री ।
चरन माँझ दीजे निवास री, सरन 'गोकुलाधीश' दास री ॥१०॥
॥ इति श्रीगोकुलाधीश विरचिता रासलीलामृत समाप्ताः ॥